अध्याय 20

परमेश्वर की विधियों को तोड़ने का दण्ड

लैव्यव्यवस्था 20 का शीर्षक पाप और उसका दण्ड है। अध्याय 18 और 19 कई विधियां यही प्रस्तुत करती हैं जिसे यहोवा ने इस्राएल को दिया था। उन विधियों को तोड़ने का तात्पर्य परमेश्वर और मनुष्य के प्रति पाप था-दूसरे शब्दों में यह एक "अपराध" था।[1]

कई देशों में, "पाप," "अपराध" का पर्याय नहीं है। जबकि मसीही लोग लगभग सभी अपराध को पाप मानते हैं, अधिकांश पाप अपराध नहीं है, क्योंकि वे देश की धर्मनिर्पेक्ष विधि का उल्लंघन नहीं करते हैं। इस्राएल में एक ही व्यवस्था - परमेश्वर की व्यवस्था थी - जो "धर्मनिर्पेक्ष" और "धार्मिक" दोनों मामलों पर नियंत्रण रखती थी। उस व्यवस्था को तोड़ना पाप था; यह अपराध भी समझा जा सकता था।[2] अध्याय 18 और 19 में यहोवा ने यह स्पष्ट नहीं किया कि अपराधी को इस अपराध के लिए किस प्रकार का दण्ड दिया जाना चाहिए। इस अध्याय के लिए दण्ड के प्रकाशन को सुरक्षित रखा गया है, जो परमेश्वर की विधियों को तोड़ने के बारे में है।

इस पाठ में जो विधियां पाई जाती हैं वह "घटना पर आधारित विधि" का स्वरूप लेती है। "घटना पर आधारित विधि" (या "केसुईस्टिक लॉ") हर एक घटना पर आधारित पापों के दण्ड का फ़ैसला देती है। यह विधि, जब कोई व्यक्ति कोई गलत कार्य करता है तो उस गलत कार्य की पहचान "यदि" या "कब" इत्यादि शब्दों से करता है, और उसके बाद यह उस कार्य का परिणाम बताता हैः "यदि कोई व्यक्ति कोई पाप करता है, तब उसके साथ यह किया जाना चाहिए।" पुराने नियम के विद्वान "घटना पर आधारित विधि" "केसुईस्टिक लॉ" का "अपोडिक्टिक" (विशेष रूप से वर्णित) विधि के बीच अंतर करते हैं, जो यह कहता है कि किसको क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए - जैसे "तू व्यभिचार न करना।"

बीसवें अध्याय के पापों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है - वे पाप जिनके लिए मृत्युदण्ड का प्रावधान था और वे पाप जिनके लिए थोड़ा कम दण्ड का प्रावधान था। मृत्युदण्ड के अंतर्गत्, अपने बच्चों को मोलेक को बलिदान करने के पाप के बारे में विशेष रूप से कहा गया है (संभवतः यह अन्य मृत्युदण्डों की तुलना में सबसे भयंकर पाप था)। इस अध्याय का सारांश यह कहकर किया गया है कि

परमेश्वर के लोगों को ऐसे दण्डों से बचने के लिए उसकी विधियों को मानना अनिवार्य था (20:22-26)। यह यहोवा की विधियों को मानने का उचित कारण बताता है।

मानवबलि का दण्ड (20:1-5)

1फ़िर यहोवा ने मूसा से कहा, 2"इस्राएलियों से कह कि इस्राएलियों में से या इस्राएलियों के बीच रहनेवाले परदेशियों में से, कोई क्यों न हो जो अपनी कोई सन्तान मोलेक को बलिदान करे, वह निश्चय मार डाला जाए; और जनता उस पर पथराव करे। 3मैं भी उस मनुष्य के विरुद्ध होकर उसको उसके लोगों में से इस कारण नष्ट करूँगा कि उसने अपनी सन्तान मोलेक को देकर मेरे पवित्रस्थान को अशुद्ध किया, और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र ठहराया। 4और यदि कोई अपनी सन्तान मोलेक को बलिदान करे, और जनता उसके विषय में आनाकानी करे और उसको मार न डाले, 5तब तो मैं स्वयं उस मनुष्य और उसके घराने के विरुद्ध होकर उसको और जितने उसके पीछे होकर मोलेक के साथ व्यभिचार करें उन सभों को भी उनके लोगों के बीच में से नष्ट करूँगा।"

लैव्यव्यवस्था 20:1-5 में जिस प्रथम अपराध के बारे में कहा गया है वह मोलेक को अपने बच्चों को बलिदान चढ़ाने के बारे में कहा गया है। पहले ही इस्राएलियों को आज्ञा दी गई थी कि उन्हें ऐसा नहीं करना है (18:21)। अब उन्हें यह सीखना था कि यदि उन्होंने किसी विधि को तोड़ा तो उनके साथ क्या किया जाना चाहिए था।

आयत 1. यह अनुच्छेद यह बताते हुए प्रारंभ होता है कि **यहोवा** ने निम्न लिखित विधियां दीं हैं। परमेश्वर ने पापों को परिभाषित किया (विशेषकर अट्ठारहवें अध्याय में); और उसने इन पापों के दण्ड के बारे में भी बताया।

आयतें 2, 3. यहाँ जिस अपराध के बारे में कहा गया है वह अपने **बच्चों** (זֶרַע, *zera'*, यथाशब्द "बीज") को **मोलेक** को बलिदान करने के बारे में है। जबकि इसके दूसरे संभावित अनुवाद भी है, संभवतः अमोनियों द्वारा पूजे जाने वाले देवता का नाम भी मोलेक है (1 राजा 11:7)।[3] किसी के बच्चे को बलिदान करने का तात्पर्य मानवबलि करना है।[4]

अपराध, **इस्राएलियों में से या इस्राएलियों के बीच रहनेवाले परदेशियों में से** हो सकता था। जो गैर-इस्राएली, इस्राएलियों के बीच रहते थे वे मूर्तिपूजा में संलग्न नहीं हो सकते थे जो इस्राएलियों को दूसरे देवताओं की आराधना करने के लिए प्रभावित कर सके।

इस अपराध का दण्ड **मृत्युदण्ड** था! इस दण्ड को देने की ज़िम्मेदारी स्थानीय लोगों (עַם הָאָרֶץ, *'am ha'aretz*), एक ऐसा अभिव्यक्ति जिसका भिन्न-भिन्न संदर्भ में भिन्न-भिन्न अर्थ है, की थी। संभवतः, इस अनुच्छेद में, यह इस्राएल की आम जनता को संबोधित करता है।[5] गाँव और नगर के लोग एक साथ मिलकर

मूर्तिपूजक को पथराव करते थे।

इस पाप को दण्डित करने के लिए परमेश्वर स्वयं इसमें सम्मिलित होता था कि वह दोषी व्यक्ति को, जिसने **अपने सन्तान को मोलेक को बलिदान** किया था **मार डाला** जाता। इस संदर्भ में परमेश्वर उसको "मार डालता" का संभवतः यह तात्पर्य है कि परमेश्वर उसको इस्राएल में उसकी वंशावली आगे न बढ़ाने के लिए निःसंतान छोड़ता।

जिसने भी अपनी संतान को मोलेक को बलिदान किया था, परमेश्वर ने उसके साथ कठोरता से व्यवहार किया। ऐसे पाप या अपराध ने परमेश्वर के पवित्र स्थान को अशुद्ध किया और उसके पवित्र नाम को अपवित्र किया। ऐसे पापों का परिणाम यह था कि परमेश्वर की पवित्र वस्तुओं की बदनामी होती। परमेश्वर और उसके लोगों को बदनाम करना अपराध था और इसका दण्ड मृत्यु था!

आयतें 4, 5. जिन लोगों को इस पाप का दण्ड देने के लिए **ज़िम्मे**दार ठहराया गया था, यदि वे उसको दण्ड न देते तो तब क्या होता? पाठ यह बताता है कि यदि लोग उस **व्यक्ति** के प्रति जिसने अपनी **संतान को मोलेक** को बलिदान किया था, दण्ड देने के लिए **अनाकानी करे**[6] - और यदि वे उसको मृत्युदण्ड न देते - तब स्वयं परमेश्वर उसको मृत्युदण्ड देता। वह अपना **मुख पापी से फेर लेता**, और उसके पश्चात् उसके साथ-साथ उसके **घराने** के सभी लोगों को **नष्ट करता**। "नष्ट करने" का तात्पर्य मृत्युदण्ड हो सकता है जो परमेश्वर के द्वारा दिया जा सकता था। इस व्यक्ति के घराने का वर्णन इस बात पर ज़ोर देता है कि परमेश्वर मूर्तिपूजक के घराने को नष्ट करने की प्रतिज्ञा करता है ताकि इस्राएल में उसका कोई वंश न रह जाए। इसके साथ ही, परमेश्वर ने इस बात की भी प्रतिज्ञा की कि वह उनके साथ भी वही करेगा जो लोग उसके कदमों पर चलते हुए **मोलेक** की पूजा करेंगे। यहाँ तक कि यदि इस्राएली लोग गलत कार्य करने वाले को दण्ड नहीं भी देते हैं, तौभी परमेश्वर निश्चय ही अपने वचन के अनुसार कार्य करेगा और उन्हें दण्ड देगा।

मृत्युदण्ड के योग्य अपराध (20:6-16)

[6]"फ़िर जो प्राणी ओझाओं या भूतसाधनेवालों की ओर फ़िरके, और उनके पीछे होकर व्यभिचारी बने, तो मैं उस प्राणी के विरुद्ध होकर उसको उसके लोगों के बीच में से नष्ट कर दूँगा। [7]इसलिये तुम अपने आप को पवित्र करो; और पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। [8]और तुम मेरी विधियों को मानना, और उनका पालन भी करना; क्योंकि मैं तुम्हारा पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ। [9]कोई क्यों न हो जो अपने पिता या माता को शाप दे वह निश्चय मार डाला जाए; उसने अपने पिता या माता को शाप दिया है, इस कारण उसका खून उसी के सिर पर पड़ेगा। [10]फ़िर यदि कोई पराई स्त्री के साथ व्यभिचार करे, तो जिसने किसी दूसरे की स्त्री के साथ व्यभिचार किया हो तो वह व्यभिचारी और वह व्यभिचारिणी दोनों निश्चय मार डाले जाएँ। [11]यदि कोई अपनी सौतेली माता के साथ सोए, वह अपने पिता ही का तन उघाड़नेवाला ठहरेगा; इसलिये वे दोनों निश्चय मार डाले

जाएँ, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा। 12यदि कोई अपनी पतोहू के साथ सोए, तो वे दोनों निश्चय मार डाले जाएँ; क्योंकि वे उलटा काम करनेवाले ठहरेंगे, और उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा। 13यदि कोई जिस रीति स्त्री से उसी रीति पुरुष से प्रसंग करे, तो वे दोनों घिनौना काम करनेवाले ठहरेंगे; इस कारण वे निश्चय मार डाले जाएँ, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा। 14यदि कोई अपनी पत्नी और अपनी सास दोनों को रखे, तो यह महापाप है; इसलिये वह पुरुष और वे स्त्रियाँ तीनों के तीनों आग में जलाए जाएँ, जिससे तुम्हारे बीच महापाप न हो। 15फ़िर यदि कोई पुरुष पशुगामी हो, तो पुरुष और पशु दोनों निश्चय मार डाले जाएँ। 16यदि कोई स्त्री पशु के पास जाकर उसके संग कुकर्म करे, तो तू उस स्त्री और पशु दोनों को घात करना; वे निश्चय मार डाले जाएँ, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा।"

परमेश्वर ने अब मूर्तिपूजा से पापों की अन्य सूची की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया, जिनमें अधिकांश पापों के लिए मृत्युदण्ड निर्धारित किया गया था। परमेश्वर ने कई मामलों को इंगित किया जिसमें पाप का दण्ड मृत्यु था। दिशा निर्देशन के लिए "ओझाओं" एंव "भूतसाधनेवालों" की ओर फ़िरने के बारे में, यहोवा ने कहा कि वह स्वयं ऐसे पाप को दण्डित करेगा। इन सभी पापों के साथ-साथ अध्याय 20 में सूचीबद्ध पापों को अध्याय 18 एंव अध्याय 19 में निन्दित किया गया है।

आयतें 6-8. *ओझाओं या भूतसाधनेवालों से सहायता मांगना* (देखें 19:31; 20:27)। 20:6-16 में सूचीबद्ध पहला पाप, **ओझाओं** या **भूतसाधनेवालों** की ओर फ़िरना है। इस पाप का मूर्तिपूजा से नज़दीकी संबंध है, चूँकि इसकी व्याख्या **उनके साथ व्यभिचार करना**, की गई है। (20:6)। मूर्ति की पूजा करना, यहोवा के साथ बंधी वाचा के प्रति अविश्वासयोग्यता प्रगट करता है; इसलिए यह व्यभिचार करने के समान था। मोलेक की पूजा करने का तात्पर्य "वैश्यागमन करना" है (20:5), परंतु ओझाओं और भूतसाधनेवालों की ओर फ़िरना भी वैसा ही है। जिसका "विवाह" यहोवा के साथ हुआ है उसका दिशा निर्देशन केवल उसी के द्वारा ही किया जाना चाहिए था; दिशा निर्देशन के लिए अन्य स्रोतों की ओर दृष्टि करना व्यभिचार करने जैसा था।

"ओझा" और "भूतसाधनेवाले" यह दावा करते थे कि वे मूरदे से संदेश ला सकते थे।[7] इस्राएलियों को ऐसे व्यक्ति पर भरोसा करने के लिए मना किया गया था (19:31)। अब तक, यहोवा ने ऐसा करने वालों को दण्ड देने की आज्ञा जारी नहीं की थी। बल्कि, उसने कहा था कि वह स्वयं गलत कार्य करने वालों को दण्ड देगा; वह **उस व्यक्ति से अपना मुख फेर लेगा** और **अपने लोगों के बीच में से उसको वह नष्ट करेगा** (20:6)। इस वक्तव्य से यह समझा जा सकता है कि यहोवा स्वयं मृत्युदण्ड देगा। फ़िर भी, इस अध्याय के अंत में, यहोवा ने आज्ञा दी कि यदि कोई "ओझाई" या "भूतसाधना" करे तो उसका पथराव किया जाए (20:27)।

अगली दो आयतें (20:7, 8) इस बात का कारण बताती हैं कि इस्राएलियों को अपने लिए ओझाओं की सहायता क्यों नहीं लेनी चाहिए थी। (1) उन्हें स्वयं

अपने आपको **पवित्र** करना चाहिए था। (2) उन्हें **पवित्र होना** चाहिए था। (3) **यहोवा** उनका **परमेश्वर** था। (4) परमेश्वर ने उन्हें **अपनी विधियां मानने और उनका अभ्यास करने के लिए कहा था** (देखें 11:44, 45; 18:2-5, 24-30; 20:22-26; निर्गमन 19:4-6; व्यव. 7:6-11)।

आयत 9. *अपने पिता या माता को शाप देना* (देखें 19:3)। अपने माता और पिता का "भय" मानने की विशिष्ट आज्ञा अध्याय 19 में पाई जाती है। यहाँ इसकी महत्वपूर्णता यह कहकर दी गई है कि परमेश्वर ने कहा कि **जो अपने पिता या माता को शाप दे वह निश्चय मार डाला जाए!** इतनी "छोटी सी" दीखने वाले पाप के लिए इतने "कठोर" दण्ड की क्यों आवश्यकता थी? इसका उत्तर यह है कि माता-पिता का आज्ञा न मानना या उनका निरादर करना परमेश्वर, छोटा अपराध नहीं समझता है! दृढ़ परिवार के लिए माता-पिता का आदर करना आवश्यक था, और दृढ़ परिवार स्थाई, ईश्वर का भय मानने वाले समाज के लिए आवश्यक था। इसलिए अपने माता-पिता का आदर करने की आज्ञा तोड़ने का उचित दण्ड मृत्यु था।

अपने माता-पिता को शाप देने के कारण जिस व्यक्ति को मृत्युदण्ड दिया जाना था उसके बारे में यहोवा ने **"उसका खून उसी के सिर पर पड़ेगा।"** (NIV के अनुसार "उनका खून उनके सिर पर पड़ेगा.") अनुवादित किया गया है। इसी तरह का वक्तव्य 20:11, 12, 13, 16, और 27 में पाया जाता है। जॉन ई. हार्टली ने कहा, "इस सूत्र का तात्पर्य यह है कि दोषी को मृत्युदण्ड मिलना चाहिए और जो इस आज्ञा का पालन करते हैं वे दोषी के खून बहाने के अपराध से मुक्त हैं।"[8]

आयत 10. *व्यभिचार करना* (देखें 18:20)। दूसरा पाप जिसके लिए मृत्युदण्ड दिया जाना चाहिए था वह व्यभिचार है। इस मामले में **जब कोई पराई स्त्री के साथ व्यभिचार करे**, सम्मिलित है। स्पष्ट रूप से इस बात पर ज़ोर देने के लिए कि **अपने मित्र के पत्नी के साथ**, कहकर इसे दोहराया गया है। कोई भी इस पाप का दोषी पाया जाए तो वह उस स्त्री के साथ जिसके साथ उसने व्यभिचार किया है, **निश्चय मार डाला जाए**।

माता-पिता का सम्मान करने की आज्ञा, परिवार की संरचना को सुरक्षित करने के लिए निर्धारित किया गया था; व्यभिचार न करने की आज्ञा वंश की शुद्धता और परिवार की एकता को सुरक्षित रखने के लिए ठहराया गया था। इस मामले में, और इसके बाद के दो अन्य मामलों में, दोनों व्यक्ति जो व्यभिचार के पाप में संलग्न होते हैं, मार डाले जाने चाहिए थे।[9]

आयतें 11, 12. *सौतेली माता या पतोहू के साथ सोना* (देखें 18:8, 15)। न केवल व्यभिचार, मृत्युदण्ड के योग्य अपराध था बल्कि कुछ अगम्यागमन के मामलों में - विशेषकर, जब एक व्यक्ति **अपने पिता की पत्नी** (सौतेली माता) के साथ व्यभिचार करने का पाप करता है या अपने **पतोहू** के साथ व्यभिचार करता है तो इस मामले में भी मृत्युदण्ड दिया जाना चाहिए था। (यदि वह अपने "सौतेली माता" के साथ व्यभिचार करता है, तो यह अपने पिता का निरादर करने के बराबर है क्योंकि वे दोनों एक तन हैं।)

दूसरे अनुवादों में, **उन्होंने व्यभिचार किया है** का अनुवाद "उन्होंने विकृत कार्य किया है" (NRSV) और "जो उन्होंने किया है वह विकृत कार्य है" (NIV)।[10] "विकृत स्वभाव" (תֶּבֶל, *थेबेल)* के लिए इब्रानी शब्द की परिभाषा "भ्रम" या "प्राकृतिक स्वभाव का उल्लंघन" किया गया है।[11] नथानिएल मिक्लेम ने कहा कि इस अनुच्छेद का "उचित अनुवाद ... 'जो उन्होंने किया वह अस्वाभाविक है।'"[12]

आयत 13. *समलैंगिकता* (देखें 18:22)। अध्याय 18 में समलैंगिकता की निंदा की गई है; यहाँ इस पाप का दण्ड स्पष्ट कर दिया गया है। इस कार्य में संलग्न दोनों व्यक्तियों को मृत्युदण्ड दिया जाना चाहिए था क्योंकि उन्होंने **घृणित कार्य** (תּוֹעֵבָה, *थोएबाह)* किया है (NRSV; ESV)। समलैंगिकता न केवल पाप समझा जाता था बल्कि मृत्युदण्ड के योग्य अपराध समझा जाता था।

आयत 14. *पत्नी और उसकी माता के साथ प्रसंग करना* (देखें 18:17)। अगम्यागमन का दूसरा मामला, जिसके लिए कठोरतम दण्ड ठहराया गया था, वह यह था कि **कोई, एक स्त्री और उसकी माता से विवाह करे**। इब्रानी पाठ में, विवाह (לָקַח, *लाखाक)* के लिए प्रयुक्त इब्रानी शब्द का शाब्दिक अनुवाद "रखना" है। इसलिए, इस अनुच्छेद में यह आवश्यक नहीं है कि दो स्त्रियों के संग विवाह किया गया है, बल्कि इसका सामान्य अर्थ उन दोनों के साथ प्रसंग करना है।

इस पाप के लिए यह दण्ड था कि इन तीनों समूह के लोगों को जिनका अनैतिक संबंध था, **आग में जलाकर** मार दिया जाना चाहिए था। संभवतः, दोषी को पथराव करके मार डालने के पश्चात् उसके लाश को आग में जलाकर भष्म कर दिया जाना चाहिए था। इन अपराधियों को मृत्युदण्ड देने का विशेष कारण यह था कि परमेश्वर के लोगों के बीच अनैतिकता या "दुष्टता" (NIV) नहीं पाया जाना चाहिए था।

आयतें 15, 16. *पशुगमन करना* (देखें 18:23)। यहोवा ने अगला दण्ड पशुगमन के लिए दिया, जिस पाप के बारे में अध्याय 18 में भी चर्चा की गई है। यदि कोई **पुरूष पशुगामी हो** (यदि उसने पशु के साथ प्रसंग किया हो) या कोई **स्त्री पशु के पास जाकर कुकर्म** (यथाशब्द, "सोए") करे, तो वे दोनों, पुरूष या स्त्री मार डाले जायँ। उसी तरह उस पशु को भी मार दिया जाना चाहिए।

जबकि इन अपराधों के लिए मृत्युदण्ड उच्चारित की जाती है, तो इसमें इस दण्ड को क्रियान्वयन करने के तरीके स्पष्ट नहीं किए गए हैं। इन मामलों में, दण्ड देने की विधि का क्रियान्वयन संभवतः पथराव करके किया जाता था (देखें 20:2), और उसके पश्चात् मृत देह को जलाया जाता था (देखें यहोशु 7:15, 25)।[13]

अपराध जिनके लिए अन्य दण्ड का प्रावधान था (20:17-21)

[17]"यदि कोई अपनी बहिन का, चाहे उसकी सगी बहिन हो चाहे सौतेली, उसका नग्न तन देखे, और उसकी बहिन भी उसका नग्न तन देखे, तो यह निन्दित बात है, वे दोनों अपने जाति भाइयों की आँखों के सामने नष्ट किए जाएँ; क्योंकि जो अपनी बहिन का तन उघाड़नेवाला ठहरेगा उसे अपने अधर्म का भार स्वयं

उठाना पड़ेगा। 18फ़िर यदि कोई पुरुष किसी ऋतुमती स्त्री के संग सोकर उसका तन उघाड़े, तो वह पुरुष उसके रुधिर के सोते का उघाड़नेवाला ठहरेगा, और वह स्त्री अपने रुधिर के सोते को उघाड़नेवाली ठहरेगी; इस कारण वे दोनों अपने लोगों के बीच में से नष्ट किए जाएँ। 19अपनी मौसी या फूफी का तन न उघाड़ना, क्योंकि जो उसे उघाड़े वह अपनी निकट कुटुम्बिनी को नंगा करता है; इसलिये उन दोनों को अपने अधर्म का भार उठाना पड़ेगा। 20यदि कोई अपनी चाची के संग सोए, तो वह अपने चाचा का तन उघाड़नेवाला ठहरेगा; इसलिये वे दोनों अपने पाप के भार को उठाए हुए निर्वंश मर जाएँगे। 21यदि कोई अपनी भौजी या भयाहू को अपनी पत्नी बनाए, तो इसे घिनौना काम जानना; और वह अपने भाई का तन उघाड़नेवाला ठहरेगा, इस कारण वे दोनों निर्वंश रहेंगे।"

सभी अपराधों के लिए मृत्युदण्ड का प्रावधान नहीं था। यहोवा ने कई अन्य अपराधों की सूची जारी की जिसके लिए दण्ड दिया जाना चाहिए था, लेकिन उन सबको मृत्युदण्ड देने की आवश्यकता नहीं थी। इन अपराधों के परिणाम के बारे में विधियाँ बताती है, "यह घिनौना है," "वे नष्ट किए जाएं," और "वह अपने अधर्म का भार स्वयं उठाएंगे" (20:17); "वे दोनों नष्ट किए जाएं" (20:18); "अपने अधर्म का भार उठाना पड़ेगा" (20:19); "अपने पाप के भार उठाए" और "वे निर्वंश मर जाएगे" (20:20); और "वे निर्वंश रहेंगे" (20:21)। ऐसा प्रतीत होता है कि जिन अपराधों के लिए मृत्युदण्ड का प्रावधान नहीं था वह दण्ड शर्मिंदगी से लेकर निर्वासन तक था। कुछ मामलों में पापी को उसके अपराध के कारण जिसे उसे लगातार उठानी पड़ती थी, सार्वजनिक रूप से कलंकित किया जाता था, या अपमानित किया जाता था; कुछ अन्य मामलों में, वह "निर्वंश" हो सकता था या फ़िर उसके कोई संतान ही नहीं होते थे। "नष्ट किए जाएं" का तात्पर्य या तो उसको इस्राएल के लोगों में से निर्वासन किया जाता था या फ़िर यहोवा जो भी दण्ड देता उसी के अधीन उसको हो जाना चाहिए था।

आयत 17. *बहिन या सौतेली बहिन के साथ प्रसंग* (देखें 18:9)। इस श्रृंखला में सूचिबद्ध प्रथम पाप या अपराध, किसी पुरूष का अपने बहिन (**उसके पिता की पुत्री**) या उसकी सौतेली बहिन (**उसकी माता की बेटी**) के साथ प्रसंग करना है। जिस पुरूष ने ऐसा किया उसने **उसकी नग्नता** देखी और उसने भी **उसको नग्न** देखा। उन दोनों को उनके अपराध के लिए नहीं मारा जाना चाहिए था। फ़िर भी, जो उन्होंने किया उसको **निन्दित** बात समझा जाना चाहिए। उन दोनों को **नष्ट कर देना** चाहिए था; और विशेषकर पुरूष को **अधर्म का भार उठाना** चाहिए था, क्योंकि मुख्यतः वही इसका ज़िम्मेदार था।

इस आयत में "निन्दित," इब्रानी शब्द חֶסֶד *(हेसेद)* से अनुवाद किया गया है, जिसका अर्थ "वाचा के प्रति विश्वासयोग्यता" है लेकिन यहाँ इसको भिन्न अर्थ के रूप में प्रयोग किया गया है। स्टीफन के. शेरवुड के अनुसार,

> [लेखक ने] एक सामान्य शब्द *(हेसेद)* का प्रयोग किया है जो एक बहुत सामान्य और धर्मवैज्ञानिक रूप से महत्वपूर्ण शब्द का समनाम है जिसका अर्थ

"विश्वासयोग्यता से प्रेम करना" है। लेकिन जिस समनाम का यहाँ प्रयोग किया गया है (और बाइबल में केवल एक अन्य स्थान, नीतिवचन 14:34 में किया गया है) का अर्थ "निन्दित" करना है। वर्जित कार्य *हेसेद* का विरोधाभास है या जो *हेसेद* का दावा करता है उसको यह अयोग्य ठहराता है।[14]

आयत 18. *ऋतुमति स्त्री के साथ प्रसंग* (देखें 18:19)। अगला वर्जित लैंगिक कार्य जिसको यहाँ सूचीबद्ध किया गया है वह किसी **ऋतुमति स्त्री** के साथ प्रसंग करना है, जिसे 18:19 में भी वर्जित किया गया है। इसका दण्ड यह था कि इस संबंध में जुड़े दोनों व्यक्तियों को **नष्ट किया जाए**। आर. के. हैरीसन ने इस दण्ड को परमेश्वर द्वारा नष्ट किया जाए, समझा।[15] अनुमान के अनुसार, जानबूझकर विधि तोड़ने के कारण दण्ड लागू होता है। यदि प्रसंग के समय बिना चेतावनी के स्त्री का लहू बहने लग जाए, तो यह असम्भव है कि परमेश्वर उन दोनों को "नष्ट करे।"

आयतें 19, 20. *मौसी के साथ प्रसंग करना* (देखें 18:12-14)। परमेश्वर उस **व्यक्ति** को दण्ड देता है जिसने अपने मौसी के साथ प्रसंग किया। यदि मौसी, **माता की बहिन** या **पिता की बहिन** थी, तो वह सगी संबंधी थी[16] और इसलिए वह उसके पसंद की पत्नी नहीं हो सकती थी। यदि वह **चाची के साथ सोता है** तो वह अपने **चाचा का तन उघाड़ने वाला ठहरेगा**। दोनों परिस्थितियों में, सभी पाप करने वालों को **अपने अधर्म का भार उठाना पड़ेगा**; और बाद वाली परिस्थिति में यहोवा ने यह निर्धारित किया कि जिन्होंने अपराध किया है वे **निर्वंश मरेंगे।** बिना विवाह के वंश रहित मर जाने की धमकी अधिक औचित्य नहीं जान पड़ता है, इसलिए इसका यह अनुमान लगाया जा सकता है कि व्यवस्था उस परिस्थिति को संबोधित कर रहा था जिसमें यह कहा जा सकता था कि एक व्यक्ति अपने चाची से विवाह करके अनुचित कार्य कर रहा था।

आयत 21. *भौजी या भयाहू से प्रसंग* (देखें 18:16)। एक पुरूष के लिए इस श्रृंखला का अंतिम वर्जित कार्य उसके **भौजी** या **भयाहू** के साथ प्रसंग करना है। एक बार फ़िर से, ऐसा प्रतीत होता है कि वर्जित वैवाहिक संबंध को यहाँ संबोधित किया गया है। यह कार्य - अपने भौजी को अपनी पत्नी बनाना - अपने आप में ही **घृणित** है (अर्थात यह अशुद्ध कार्य है)। चाची को पत्नी बनाने के समान ही, इस घृणित कार्य के लिए दण्ड, एक गम्भीर विषय है: **वे निर्वंश रहेंगे।** संभवतः, यह उपवाक्य का अर्थ, 20:20 के उपवाक्य के समान ही है कि यदि वे विवाह भी कर लें तो वे निर्वंश रहेंगे।[17]

अट्ठारहवें अध्याय में वर्णित अधिकांश यौन पाप का विश्लेषण इस अध्याय में किया गया है, लेकिन कुछ वर्णित नहीं किए गए हैं। उन पापों के बारे में इस्राएलियों को क्या करना था जिनके लिए दण्ड निर्धारित नहीं किए गए थे? संभवतः इस अध्याय में पाए जाने वाले मामले उन सबके लिए एक नमूना के रूप में रखे गए थे। यदि कोई यौन पाप करता है तो उसका दण्ड उसके नज़दीकी पाप के दण्ड से तय किया जाएगा।

परमेश्वर के विधियों एंव व्यवस्था को मानने के लिए प्रोत्साहन (20:22-27)

**22"तुम मेरी सब विधियों और मेरे सब नियमों को समझ के साथ मानना;
जिससे यह न हो कि जिस देश में मैं तुम्हें लिये जा रहा हूँ वह तुम को उगल दे।
23और जिस जाति के लोगों को मैं तुम्हारे आगे से निकालता हूँ उनकी रीति रस्म
पर न चलना; क्योंकि उन लोगों ने जो ये सब कुकर्म किए हैं इसी कारण मुझे उनसे
घृणा हो गई है। 24पर मैं तुम लोगों से कहता हूँ कि तुम तो उनकी भूमि के अधिकारी
होगे, और मैं इस देश को जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं तुम्हारे अधिकार
में कर दूँगा; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जिसने तुम को अन्य देशों के लोगों से
अलग किया है। 25इस कारण तुम शुद्ध और अशुद्ध पशुओं में, और शुद्ध और अशुद्ध
पक्षियों में भेद करना; और कोई पशु या पक्षी या किसी प्रकार का भूमि पर
रेंगनेवाला जीवजन्तु क्यों न हो, जिसको मैं ने तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहराकर वर्जित
किया है, उससे अपने आप को अशुद्ध न करना। 26तुम मेरे लिये पवित्र बने रहना;
क्योंकि मैं यहोवा स्वयं पवित्र हूँ, और मैं ने तुम को और देशों के लोगों से इसलिये
अलग किया है कि तुम निरन्तर मेरे ही बने रहो। 27यदि कोई पुरुष या स्त्री ओझाई
अथवा भूत की साधना करे, तो वह निश्चय मार डाला जाए; ऐसों पर पथराव
किया जाए, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा।"**

यह अध्याय, और परमेश्वर के विधियों और नियमों का यह अनुभाग, इस्राएलियों को यह प्रोत्साहित करते हुए समाप्त होता है कि उन्हें जो विधियां और नियम दिए गए हैं उन "सभी" का वे पालन करें। यह इस्राएल को इन विधियों को पालन करने के कारणों का भी पुनरावृति करता है - ताकि ये लोग परमेश्वर के पवित्र जाति होने की भूमिका की पूर्ति कर सकें।

अध्याय अट्ठारह से अध्याय बीस, यहोवा की इस घोषणा के साथ प्रारंभ होता है कि वह मूसा के द्वारा इस्राएलियों को एक संदेश देता है (18:1, 2; 19:1, 2; 20:1, 2)। अगले अध्याय में, परमेश्वर ने मूसा के द्वारा "याजकों" को संदेश दिया (21:1)। इसके आगे के अध्यायों में भी मुख्यतः याजकों को संबोधित संदेश पाया जाता है। इसलिए, अध्याय 20 के अंतिम अनुभाग को केवल इस अध्याय के सारांश के रूप में ही नहीं समझा जाना चाहिए, बल्कि इसे सभी तीनों अध्यायों का सारांश और चर्मोत्कर्ष भी समझा जा सकता है जो इस देश का धार्मिक, और नैतिक जीवन पर प्रभुता करता है। आयतें 22 से 26 सारांश, निष्कर्ष, और अनुमोदन जैसा है जो यहोवा के संदेश से संलग्न है जिसे उसने अपने लोगों को प्रचार किया था। ये आयतें इस्राएल का पवित्र होने की लक्ष्य प्रस्तुत करता है। ये आयतें देश की पवित्रता का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए तीन ज़िम्मेदारियों की पहचान करते हैं।

आयत 22. देश की सर्वप्रथम ज़िम्मेदारियां यह थी कि परमेश्वर ने उन्हें जितनी आज्ञाएं दी थी उन **सबको उन्हें मानना** था। यदि वे उन विधियों को मानने में

असफल होते, तो जिस **देश** में यहोवा उनको **रहने के लिए ले जा रहा था**,[18] वह **उन्हें उगल** देता; वह उनको उस देश से बाहर निकाल देता। जिस तरह वे दूसरे जातियों को उस देश से बाहर निकालने वाले थे उसी तरह उन्हें भी बलपूर्वक उस देश से बाहर निकाल दिया जाएगा।

आयतें 23, 24. इस्राएलियों की दूसरी ज़िम्मेदारी प्रथम ज़िम्मेदारी पर अंतर्निहित था। उन्हें यह सुनिश्चित करना था कि वे उस देश के लोगों, जिनको परमेश्वर उनके सम्मुख से **निकालने वाला था**, की **रीति रस्म के अनुसार** (यथाशब्द "विधियों पर चलना") नहीं चलना था। इस्राएल के लोगों को कनान देश के लोगों के घिनौने कार्यों का अनुसरण नहीं करना था जिनको परमेश्वर भी **घृणित** समझता था।

जो **भूमि** उनको मिलने वाली थी वह एक अच्छी, फलदार भूमि थी, जिसमें **दूध और मधु की धारा बहती थी**। इसका तात्पर्य यह हुआ कि इस्राएल के आभारी होने का परिणाम उनके आज्ञाकारी होने के द्वारा प्रमाणित होना था। उनका भविष्य अच्छी भूमि से जुड़ा हुआ था जहाँ वे रहने जा रहे थे। यदि उन्होंने वहाँ रहने वाले लोगों के रीति-रस्मों का अनुकरण किया, तो वे उस भूमि के अच्छे फलों से वंचित किए जाएंगे और उन्हें वहाँ से बाहर निकाल दिए जाएगें।

आयत 25. तीसरी ज़िम्मेदारी जो इस्राएल को दी गई थी वह यह था कि उन्हें **शुद्ध और अशुद्ध ... में भेद करना था।** लोगों को इस बात के लिए सावधान रहना चाहिए था कि वे अपने आपको अशुद्ध न करें, ताकि वे अशुद्ध चीज़ें स्वीकार कर **घिनौने** न ठहरें। स्पष्ट रूप से यह आज्ञा इस पुस्तक में इस संबंध में पहले दी गई आज्ञा से संबंधित है; यह इस बात का सुझाव प्रस्तुत करता है कि परमेश्वर इस्राएल को रीति रिवाज़ और नैतिकता में भिन्न देखना चाहता था। "शुद्ध और अशुद्ध ... में भेद करने" का वर्णन यह उपमा प्रस्तुत करता है कि परमेश्वर इस्राएल से क्या अपेक्षा कर रहा थाः अलग किए गए लोग, पापमय रीति रिवाज़ के कारण "अशुद्ध" हुए लोगों के बीच में एक "शुद्ध" जाति।

आयत 26. यदि इस्राएली लोग इन ज़िम्मेदारियों की पूर्ति करते हैं, तो वे एक अलग देश के लिए परमेश्वर के उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। उसने उन्हें **पवित्र होने के लिए** चुना, **जातियों** से उसने उन्हें अलग किया। उन्हें परमेश्वर के साथ संबंध में, यहोवा की आराधना करने में, और दैनिक दिनचर्या में, भिन्न होना चाहिए था। लैव्यव्यवस्था की पुस्तक के पिछले अध्यायों में पवित्रता की आज्ञा का लक्ष्य पाया जाता है।

आयत 27. यह अध्याय एक आज्ञा के साथ समाप्त होता है जो एक चेतावनी भी देता है। इससे पहले यहोवा ने कहा कि जो "ओझाई" या "भूतसाधनेवालों" की ओर फिरे वह "नष्ट किया जाएगा" (20:6)। यहाँ उसने विधि के अनुसार दण्ड भी निर्धारित किया कि इस्राएलियों को झूठे धार्मिक अगुओं की सहायता नहीं लेना चाहिए था। उसने कहा कि **यदि कोई पुरुष या स्त्री ओझाई अथवा भूत की साधना करे, तो वह निश्चय मार डाला जाए**। यह व्यवस्थाविवरण 13:5 के अनुरूप है, जो यह कहता है कि झूठे भविष्यवक्ताओं को मार डाला जाए।

आयत 27 संदर्भ से बाहर दीख पड़ता है,[19] लेकिन यह अनुच्छेद इस अध्याय की प्राथमिक शीर्षक के स्मरणपत्र के साथ समाप्त होता हैः जो जानबूझकर और विद्रोही होकर परमेश्वर के विरूद्ध बलवा करते हैं और उसके विधियों को नहीं मानते हैं, वे दण्डित किए जाएंगे, और उनको मृत्युदण्ड भी दिया जा सकता था।

अनुप्रयोग

अपराध और दण्ड (अध्याय 20)

अपराध और दण्ड प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का शीर्षक है जिसकी रचना रूसी उपन्यासकार फ्योदोर दोस्तोयेवस्की ने 1866 में की थी। ये शब्द लैव्यव्यवस्था 21 के मुख्य शीर्षक के रूप में दिखाई देता है - और इसलिए, यह सम्पूर्ण बाइबल का शीर्षक है। यह अध्याय (और सामान्यतया पवित्रशास्त्र का विस्तृत संदर्भ) क्या शिक्षा देती है?

सर्वप्रथम, अपराध का अंत दण्ड है। लैव्यव्यवस्था 20 हमें यह बताती है कि इस्राएलियों के अपराध का परिणाम दण्ड था। लैव्यव्यवस्था 18 और 19 में आज्ञाएं पाईं जातीं हैं, जिसमें इस्राएलियों को क्या करना चाहिए और किससे बच के रहना चाहिए। और तत्पश्चात् अध्याय 20 यह कहता है कि जिन्होंने यहोवा की विधियां तोड़ीं हैं उनका क्या होगाः उन्हें दण्डित किया जाएगा।

पूरी बाइबल में यही सत्य है कि परमेश्वर ने उन लोगों को लगातार दण्ड दिया जिन्होंने उसके विरूद्ध पाप किया था। उदाहरण के लिए, आदम और हव्वा ने पाप किया और उन्हें अदन की बाग से बाहर कर दिया गया। नूह के दिनों में संसार दुष्टता से भर गया और तब परमेश्वर ने इसको नष्ट कर डाला। कालांतर में, इस्राएल ने लगातार परमेश्वर से बलवा किया, और तब उसने देश को बंधुआई में जाने दिया। ये उदाहरण हमें यह बताते हैं कि जो लोग परमेश्वर के विरूद्ध पाप करके दोषी ठहरते हैं वे दण्डित किए जाएंगे। बाइबल बताती है, "जान रखो कि तुमको तुम्हारा पाप लगेगा" (गिनती 32:23), और "जो भी मनुष्य बोता है वह उसे काटेगा" (गला. 6:7)।

दूसरा, दण्ड अपराध के अनुसार होना चाहिए। लैव्यव्यवस्था 20 इस बात का विश्लेषण करता है कि दण्ड अपराध की गम्भीरता के अनुरूप होना चाहिए। कुछ पाप मृत्युदण्ड की श्रेणी के अंतर्गत रखे गए थे। उनको मृत्युदण्ड देकर दण्डित किया जाना चाहिए था; और अन्य इस्राएली लोग ऐसे अपराध के लिए दण्ड देने से किसी भी तरह से नहीं रोक सकते थे। फ़िर भी, इस अध्याय में वर्णित *हर एक* पाप के लिए मृत्युदण्ड नहीं दिया जाना चाहिए था; पाठ कुछ ऐसे पापों के बारे में भी वर्णन करता है जिसको कुछ हल्के दण्ड देकर दण्डित किया जाना चाहिए था। लैव्यव्यवस्था की एक और अनुच्छेद इस तथ्य का विश्लेषण करती है कि दण्ड अपराध के अनुरूप होना चाहिए। "फ़िर यदि कोई किसी दूसरे को चोट पहुँचाए, तो जैसा उसने किया हो वैसा ही उसके साथ भी किया जाए, अर्थात अंग भंग करने

की सन्ती अंग भंग किया जाए, आँख की सन्ती आँख, दाँत की सन्ती दाँत, जैसी चोट जिसने किसी को पहुँचाई हो वैसी ही उसको भी पहुँचाई जाए" (24:19, 20)।

नया नियम में, जो परमेश्वर के विरूद्ध बलवा करता है, उसके लिए उचित दण्ड क्या रखा गया है? अब यह उसकी आत्मिक मृत्यु और हमेशा-हमेशा के लिए नरक है। यह एक व्यभिचारी, झूठा, और सभी पापियों के लिए सत्य है। बाइबल एक सार्वजनिक सत्य के बारे में बताती है "पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है" (रोमियों 6:23)। दूसरे शब्दों में, एक हत्यारा आत्मिक रूप से मर जाता है; वह परमेश्वर से अलग किया गया है। कोई भी यह सोचकर आश्यचर्य में पड़ सकता है, "जब कोई दूसरे के साथ सोता है तो उसकी आत्मिक मृत्यु कैसे हो जाती है, यह कैसा उचित दण्ड हो सकता है?" इसका उत्तर यह है कि सभी पाप चाहे हम उसे मुख्य या गौण मानें, पवित्र परमेश्वर के विरुद्ध पाप है और इसको मृत्युदण्ड देने की आवश्यकता है।[20]

तीसरा, अपराध के लिए दण्ड अनिवार्य नहीं है। लैव्यव्यवस्था 20 इस बात को संबोधित नहीं करता है कि परमेश्वर के लोग जब एक बार अपराध कर लेते थे तो क्षमा किए जा सकते थे। बल्कि, पुराना नियम इस विषय को किसी अन्य स्थान पर सम्बोधित करता है। यह यह प्रदर्शित करता है कि परमेश्वर अपने लोगों के पाप क्षमा कर सकता है और क्षमा करेगा ताकि वे उसके द्वारा दण्ड न पाएं। उदाहरण के लिए, राजा दाऊद ने अपराध किया किन्तु परमेश्वर ने उसे नहीं मारा। (लेकिन दाऊद को अपने पापों का कठोर परिणाम भुगतना पड़ा।) इसके साथ ही, इस्राएल के लोगों ने, जिसे हम "मृत्युदण्ड" कहते हैं, को कई बार श्रेय दिया था, परंतु परमेश्वर ने इस अभिप्राय से उन्हें क्षमा किया कि उसने उन्हें नष्ट नहीं किया। जो दण्ड उनको मिलना चाहिए था, वह उन्हें नहीं दिया गया।

इस बात का सर्वोत्तम उदाहरण कि लोगों को सर्वदा दण्ड नहीं दिया गया था, नया नियम में पाया जाता है। यीशु ने हमारे और हमारे दण्ड के बीच हस्तक्षेप करने के लिए देहधारण किया था। उसके आने और क्रूस पर मृत्यु के कारण, हमें मृत्यु अनुभव करने की आवश्यकता नहीं है।

उपसंहार। यदि हम अपने आपको निम्न करेंगे तो हमें मिलने वाले दण्ड से हम बच सकते हैं ...

यीशु और उसके बचाने वाले क्षमता पर विश्वास करें (यूहन्ना 8:24);
अपने पापों को पहचान कर, यह अंगीकार करते हुए कि हम परमेश्वर के क्रोध के शिकार हुए हैं;
अपने पापों से पश्चाताप करें, और उनसे मुँह मोड़ लें (लूका 13:3);
परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु का अंगीकार करें (मत्ती 10:32, 33);
बपतिस्मा के लिए मसीह के आदेशानुसार उद्धार पाने के लिए परमेश्वर से निवेदन करें (मत्ती 28:18-20; प्रेरितों 2:38)।

यदि हम इन निर्देशों का पालन करेंगे तो मसीह के लहू द्वारा परमेश्वर की अनुग्रह से बचाए जाएंगे और यहोवा परमेश्वर के विरूद्ध पाप करने के कारण जो दण्ड हमें मिलना चाहिए था उसको अनुभव नहीं करेंगे।

समाप्ति नोट्स

[1]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन ने अध्याय 20 की टिप्पणी इन शब्दों के साथ आरंभ किया, यह अध्याय अधिकत्तर अध्याय 18 में छादित विषय की पुनरावृति करती है, अंतर केवल इतना है कि वहाँ जो पाप समझा गया है, यहाँ उसे अपराध कहा गया है जो दण्ड आकर्षित करता है (जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमेंट्री ऑन लैव्यव्यवस्था एण्ड गिनती* [एबीलीन, टेक्सासः ए.सी.यू. प्रेस, 1987], 181)। [2]एक टीकाकार के अनुसारः "एक समाज के रूप में इस्राएल की नींव यहोवा की वाचा पर रखी गई थी, और इसलिए वाचा के इस संबंध को जिस बात से खतरा उत्पन्न होता था वह अपराध के समतुल्य था और देश का सर्वोच्च अधिकार अर्थात परमेश्वर के नाम से उसे दण्डित किया जाता था" (क्रिस्टोफ़र जे. एच. राइट, "लैव्यव्यवस्था," *न्यू बाइबल कमेंट्रीः 21st संस्करण*, संपादक डी. ए. कारसन, आर. टी. फ़्रांस, जे. ए. मोत्यर और जी. जे. वेनहैम [डॉनर्स ग्रूव, इलनॉयसः इंटरवर्सिटी प्रेस, 1994], 149)। [3]चूँकि इब्रानी में विशेष रूप से इस शब्द के आगे एक विशेष शब्द वर्ग ("the Molech") लिखा गया है, तो कुछ विद्वानों की मान्यता है कि यह व्यक्तिगत् नाम न होकर एक विश्लेषण मात्र है। इब्रानी में राजा (מֶלֶךְ, *मेलेक)* के लिए प्रयोग किया गया व्यंजन भी हो है, अतः इसका अर्थ "शासन करने वाला" हो सकता है। [4]क्लायड एम. वुड्स ने लिखा, "विकृत कनानी अभ्यासों में से, कालांतर में इस्राएलियों ने बच्चों के बलि का अनुसरण किया (भजन 106:38, यिर्म. 7:31, 32:35 एंव अन्य अनुच्छेद इसकी पुष्टि करते हैं)। यह ऐसा बलिदान है कि जिसके बारे में स्पष्ट रूप से बच्चों को 'होम करके मोलेक को बलिदान करना' था (18:21; KJV) या बच्चों को मोलेक को देना था" (क्लायड एम. वुड्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती - व्यवस्थाविवरण*, द लिविंग वे कमेंट्री ऑन दि ओल्ड टेस्टामेंट, खण्ड 2 [श्रेपोर्ट, लुसियाबाः लेम्बर्ट बुक हाऊस, 1974], 50)। [5]आर. के. हैरीसन का दूसरा दृष्टिकोण है, इस अभिव्यक्ति का आशय संभवतः यह है "देश की ओर से नियुक्त एक वैधानिक परिषद।" उन्होंने यह भी कहा कि अन्य लोगों की मान्यता है इसका अर्थ "पुरूष भूस्वामी" है और कुछ अन्य लोगों की मान्यता यह है कि यह देश की "आम जनता" है। (आर. के. हैरीसन, *लैव्यव्यवस्था*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज [डॉनर्स ग्रूव, इलनॉय: इण्टर-वर्सिटी प्रेस, 1980], 204.) [6]"अनाकानी करे" का इब्रानी पाठ में शब्दशः "मूँदना, वे अपनी आँखें मूँद लेते" है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि जिस व्यक्ति ने मोलेक को बलिदान करके पाप किया है उसको देखने या उसको मानने या उसके प्रति कुछ करने से इनकार करते। [7]"ओझाओं" और "भूतसाधनेवालों" के बजाय अन्य अनुवादों में "जाने पहचाने आत्माएं" और "जादूगर" (KJV); "माध्यम" और "जादूगर" (NRSV); "माध्यम" और "भविष्य बताने वाले" (NAB); "भूतसाधनेवाले" और "आत्माएं" (REB); और "मुर्दों की आत्माएं" और "जादूगर" (NJB) अनुवाद किया गया है। गॉर्डन जे. वेनहैम ने लैव्यव्यवस्था 19:31 पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि "माध्यमों" और "आत्माओं" के विरूद्ध निषेधाज्ञा ने "किसी का यह दावा कि उनका मुर्दों की आत्माओं से संपर्क है" का बहिष्कृत करता है। उन्होंने आगे कहा, "माध्यम ... आमतौर पर जादू टोना से संबंधित है (लैव्य. 20:6; व्यव. 18:11; 1 शमूएल 28:3, इत्यादि)" (गॉर्डन जे. वेनहैम, *द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था*, द न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री ऑन दि ओल्ड टेस्टामेंट [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979], 273)। 1 शमूएल 28:7-25 में माध्यमों से संपर्क करने का एक उदाहरण पाया जाता है, जिसमें शाऊल एन्दोर में एक "भविष्य बताने" वाली स्त्री के पास जाते हैं जो भविष्यवाणी करती थी। [8]जॉन ई. हार्टली, *लेवीटीकस,* वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, खण्ड 4 (डालसः वर्ड बुक्स, 1992), 331. [9]व्यभिचारिणी स्त्री, जिसे यीशु के सम्मुख लाया गया था, के कहनी में (यूहन्ना 8:1-11), उस पर दोषारोपण करने वालों ने व्यभिचार करने वाले दोनों व्यक्तियों

में से केवल एक ही को पकड़कर व्यवस्था का उल्लंघन किया था। [10]अन्य अनुवादों यह इस प्रकार अनुवाद किया गया है: "उनका कार्य स्वाभविक कार्य का उल्लंघन है" (REB); "उन्होंने एक घृणित कार्य किया है" (NAB); और "उन्होंने स्वाभाविक कार्य का उल्लंघन किया है" (NJB)।

[11]फ्रांसिस ब्राऊन, एस. आर. ड्राइवर, और चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *ए हिब्रू एण्ड इंगलिश लेक्सीकन ऑफ़ दि ओल्ड टेस्टामेंट* (आक्सफोर्ड: क्लेयरडन प्रेस, 1977), 111. [12]नथानिएल मिक्लेम, "द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था," *दि इंटरप्रेटर्स बाइबल*, खण्ड 2, संपादक जॉर्ज आर्थर बटरिक (नैशविल: अबिंगदन-कोक्सबरी प्रेस, 1953), 102-3. [13]क्लायड एम. वुड्स और जस्टिन एम. रोजर्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती,* द कॉलेज प्रेस NIV कमेंट्री (जॉप्लीन, मिशूरी: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कम्पनी, 2006), 128. संभवत:, इन मामलों में अधिकतम दण्ड मृत्युदण्ड ही दिया जा सकता था। कुछ मामलों में विशेष परिस्थिति में दोषी पर इससे कम दण्ड का प्रावधान रहा होगा। [14]स्टीफन के. शेरवुड, *लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण*, बेरित ओलाम: स्टडीज इन हिब्रू नैरेटीव एण्ड पोएट्री (कॉलेजविल, मिनसोटा: लिटर्जीकल प्रेस, 2002), 78. [15]हैरीसन, 206. [16]"सगे संबंधी" (שְׁאֵר, *शीर)* यथाशब्द "देह" है। विचारधारा यह है कि कोई अपने स्वयं की "देह" से प्रसंग न करे। [17]वॉलटर सी. कैसर, जूनियर, के अनुसार, "यह अभिव्यक्ति उसके लिए प्रयोग किया गया है जिसका यिर्म. 22:30 के अनुसार पहले से ही पाँच पुत्र हैं। परंतु चूँकि उस राजा के पाँच पुत्रों को खोजे बनाए गए हैं (यशा. 39:7), तो उनको दाऊद के सिंहासन का उत्तराधिकार नहीं मिला, और इस संदर्भ में, इसलिए, 'राजा निर्वंश व निष्फल रह गया।' इस पाठ में भी इसका यही अर्थ हो सकता है" (वॉलटर सी. कैसर, जूनियर, "द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था," *द न्यू इंटरप्रेटर्स बाइबल*, खण्ड 1, सम्पादक लियांडर ई. केक [नैशविल: अबिंगदन प्रेस, 1994], 1142). [18]"रहना" इब्रानी शब्द יָשַׁב *(याशव)* से उधृत है, जिसका यथाशब्द अर्थ "में बसना" है। [19]रॉय गेन के अनुसार टीकाकारों ने इस आयत की व्याख्या विभिन्न तरीके से की है। कुछ यह सुझाव देते हैं कि यह इस अध्याय की स्तम्भ सृजन जैसा है; तो अन्य इसे दूसरे अध्याय में प्रवेश करने के अवस्थांतर के रूप में देखते हैं; जबकि कुछ अन्य यह मत रखते हैं कि जब यह अध्याय लिखा जा चुका था तो यह आयत कालांतर में जोड़ दिया गया था। गेन ने आयतें 2 और 27, आयतें 6 और 27, आयतें 7 और 26, और आयतें 8 और 22 की समानता के अनुसार इस मत का समर्थन किया कि यह इस अनुच्छेद के लिए स्तम्भ सृजन प्रस्तुत करता है। (रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, दि NIV ऐप्लिकेशन कमेंट्री [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जॉडरवैन, 2004], 363.) [20]इसका तात्पर्य यह नहीं हुआ कि परमेश्वर की दृष्टि में सभी पाप बराबर है (देखें यूहन्ना 19:11)। नया नियम यह संकेत करता है कि नरक में अलग-अलग प्रकार के दण्ड दिए जाएंगे (मत्ती 11:20-24; लूका 12:41-48; 20:47; इब्रा. 10:26-31)।